शैलेश मटियानी के 'हौलदार'- आंचलिक उपन्यास में नारी के विविध रूप

डॉ. माया सगरे – लक्का
सह आचार्य,
कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग
रेवा विश्वविद्यालय, बैंगलोर

सारांश- *हौलदार आंचलिक उपन्यास मेंपर्वतीय जीवन का यथार्थ चित्रण किया गया है | इस उपन्यास में अंचल सम्बन्धी धार्मिक,सामाजिक, सांस्कृतिक मान्यताओं का मार्मिक अंकन हुआ है | उपन्यास में उपन्यासकार ने स्पष्ट किया है कि अस्पष्ट वासनाएं एवं महत्वाकांक्षाएं किस प्रकार शारीरिक अक्षमताओं से संयुक्त होकर मनोवृत्ति को जन्म देती है | जिसमें स्वार्थ, संघर्ष और अविश्वास के अतिरिक्त और कुछ नहीं रह पाता | कुमायूं का प्रदेश, वहां कि भाषा बहुत ही प्रभावशाली है | वास्तव में आंचलिक शब्दों से तमहोदी कठिनाई होती है किन्तु बाद में ये सारे शब्द परिचित हो जाते है और रुचि पैदा करते है | इसमें मुहावरेदार भाषा, लोकगीत उपन्यास में रूचि पैदा करते है | नारी के अनेक रूपों में माता, पत्नी और कन्या, नानन्द, विधवा, बहु ये रूप शाश्वत माने जाते है | हर नारी कि अपनी कहानी परिपूर्ण है |*

कुंजीरूप शब्द – कुमायूं क्षेत्र, धौलछीना गांव, परिवेश, नारी के रूप – पत्नी, कन्या, विधवा, अन्य नारी पात्र । |

शैलेश मटियानी एक प्रसिद्ध कथाकार है | उपन्यास और कहानी के क्षेत्र में हिंदी साहित्य में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा है । इनका रचनाकाल 1959 के आसपास शुरू होता है । इनके आंचलिक उपन्यास मूल्य तथा कुमायूं क्षेत्र की पृष्ठभूमि पर आधारित है और उन्होंने अपने आंचलिक उपन्यासों के विषय वस्तु पहाड़ी गांव में रहने वालों की जीवन संघर्ष से लिया है । जीवन जगत से संबंधित अनेक पहलुओं समस्याओं को स्पष्ट करते हुए इनके आंचलिक उपन्यास अपने आप में विविधताओ को समेटे हुए हैं ।

हौलदार यह उपन्यास भी कुमायूं क्षेत्र के आंचल से संबंधित लोकजीवन का चित्रण करने वाला एक आंचलिक उपन्यास है । यह उपन्यास एक ऐसे युवक की कहानी है जो समाज में अपना प्रभाव जमाने के लिए हौलदार बनना चाहता है । परंतु प्रशिक्षण काल में ही अपनी ही गोली से घायल होकर एक टांग गँवाकर 6 महीने में ही गांव लौट आता है ।

शारीरिक अक्षमता में उसकी इच्छाएं कुंठा बन जाती है। वस्तुतः हौलदार का कथानक इसी हीन भावना को जनित क्रिया - प्रतिक्रियाओं का मनोवैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करता है। इस उपन्यास का संपूर्ण थाना क्षेत्र के गांव तथा उसके आसपास के गांवों में होता है। स्वयं इस पर्वतीय क्षेत्र का निवासी होने से इस प्रदेश का जीवन और स्वयं अनुभव है। कथानक के आरंभ में ढोला गांव तथा वहां के परिवेश का लेखक ने यथार्थ चित्रण किया है।

" धौलछीना गांव साधारण- सा है। अल्मोड़ा शहर से 13 -14 मील की दूरी पर, बिनसर पर्वत की उपत्यका - माथे बसा, छोटा सा पड़ाव भी है | यहां शहर से गांव की ओर सामान ढोने वाले घोडिये, अपने खच्चरों के साथ अक्सर ठहर जाया करते हैं | खच्चरों के रहने को टीन - छाये छप्पर बने हैं। घास - चने की भी व्यवस्था है | घोडियों के अलावा, अक्सर देश प्रदेश की नौकरी चाकरी से आ रहे, या जा रहे लोग भी ठहर जाते हैं | अबेर हो जाने पर। थोड़ी सी दुकानें हैं। उनमें से एक डुगुरसिंग के भाई चरणसिंग की थी।"[i]

पहाड़ के और गांव की तरह, धौलछीना में भी लोगों के घर पंक्तिबद्ध बने हुए थे | एक-एक पंक्ति में कई घर बने हुए थे |.... पूरे धौलछीना गांव में घरों की तीन पंक्तियां थी | पंक्तिबद्ध घरों का प्रत्येक समूह बाखली कहलाता है | धौलछीना गांव तीन बाखलियों का था। सबसे ऊपर की बाखली में जो घर थे , उनमें से एक किसनसिंह नेगी का था और उनके भाई हरकसिंह का, जिसके शरीर में सैम देवता का अवतार होता था | तीसरा कर उस बाखली में केसरसिंह जड़ोंत जगदिया का था, जो गोल्ल - गंगनाथ और भाना देवताओं का अवतार कराने की गुरुविद्या जानता था | केसरसिंह की घरवाली गोपुली के शरीर में गोल्ल-गंगनाथ और भाना तीनों एकसाथ अवतार कराने की गुरुविद्या जानता था। केसरसिंह की घरवाली गोपुली के शरीर में गोल्ल – गंगनाथ और भाना तीनों एकसाथ अवतार लेते थे |

धौलछीना की इन तीनों बाखलियों में अधिकांश ठाकुर रहते थे। इसके अगल-बगल में पल्यू और पत्थरखानी यह दोनों ब्राह्मणों के गांव थे | इसके अलावा पड़ोस में कलौन गांव था, जहां ब्राह्मण- ठाकुर दोनों की जनसंख्या थी तो पीठ की तरफ नैगो का गांव नैल पड़ता था। प्रत्येक गांव में डूमों के घर भी थे, इनकी बस्ती को डुमौड कहा जाता था। इस प्रकार उपन्यासकार ने धौलछीना का विस्तृत परिचय देकर उसकी भौगोलिक सीमा निश्चित की है |

हौलदार में नारी के विविध रूप –

हौलदार में कुमाऊं अंचल के पर्वतीय जनजीवन का यथार्थ चित्रण किया गया है | वहां के सामाजिक,धार्मिक, सांस्कृतिक परिवेश के परिपेक्ष में प्रभावशाली ढंग से इसका

वर्णन किया गया है | संपूर्ण उपन्यास में डूंगरसिंह का चरित्र महत्वपूर्ण बन गया है और इसमें कुछ नारी चरित्र भी प्रभावी रूप से आए हुए हैं | जिनमें लछमा, जैंता, गोविंदी, नरुली, दुरगुली, पण्डितायन इत्यादि नारी चरित्र प्रमुख रूप से आए हुए हैं तो इसमें गौण रूप से खिमुली, भिमुली, गोपुली काकी, भागुली, नदुली इत्यादि आए हुए हैं | सभी नारी पात्र पारिवारिक संबंधों से ही मुखर है | आर्थिक आधार से भागुली, नदुली निम्नवर्गीय पात्र है, तो शेष सभी पात्र मध्य वर्ग से संबंधित है ।

पत्नी के रूप में लछमा - पारिवारिक संबंधों में नारी एक साथ अनेक सी भूमिका निभाती है । एक ही समय में वह एक स्त्री, पत्नी, मां, बहू, भाभी आदि रूपों में नजर आती है । इन सब संबंधों को वह किस प्रकार से निभाती है, उस पर उसके चरित्र की ऊंचाई निर्भर होती है । इस दृष्टि से लछमा के चरित्र को देख तो वह इस ऊंचाई के पास भी नहीं पहुंच पाती । लछमा ठेकेदार जमनसिंह की बड़ी बहू और गोबर सिंह की पत्नी है। नौ बच्चों की मां लछमा जैंता की जेठानी तथा जसवंत सिंह और गोविंद जी की भाभी है । इस भरे पूरे परिवार की कर्ता- धर्ता नारी यही है, पर सबके साथ उसका व्यवहार एक-सा नहीं है । अपने पति और बच्चों के खाने-पीने का पूरा ध्यान रखने वाली लछमा, जैंता और गोविंदी के खाने-पीने में कंजूसी ही बरतती है । "दूध-दही से लेकर, हर अच्छी-भली चीज में ताला ही लगा रहता था और उन तालों की चाबियां सिर्फ लछमा के गुच्छे में ही शोभा पाती थी ।"[ii]

लछमा का पति गोबरसिंह गोठ का बैल, अपनी पत्नी का गुलाम था। पत्नी के क्रोध में के आगे वह हमेशा ही कमजोर पड़ता था । गोबरसिंह घर गिरस्ती में के मामले में भले ही लापरवाह रहे पर बच्चा पैदा करने में लछमा ने अपने पति को कभी लापरवाही नहीं करने दी । तभी तो नौ आँखों के सपने सामने थे और दसवा पेट में | लछमा अपने बच्चों के भविष्य को लेकर अक्सर चिंतित रहती थी । अपने बच्चों का सदैव ख्याल रखने वाली लछमा की जीभ जैंता, गोविंदी और जसोंता के लिए सांप जैसी लपलपाती रहती थी । थोकदार के शब्दों में "लछमा मेरी ठुली ब्वारी - इस जैंता छोरी और छोटे जैसोंतिया के लिए सर्प -जैसी डंसेली जीभ लपलपाती फिरती है।"[iii] उसकी जीभ दीपावली के पटाखों की तरह फटफटाती रहती है । उसकी इस आदत के संबंध में उसके ससुर का यह कथन बिल्कुल सही है कि, "लछमा के हाथ कम चलते हैं, जीभ ज्यादा चलती है।"[iv] जैंता और गोविंदी को पच्चिसो कामों में उलझाए रखती है । फिर भी उनके कामों में कोई ना कोई दोष निकालती ही रहती है । दूसरों को नाम रखने की उसे आदत-सी पड़ गई है । थोकदार भी लछमा की इस आदत को जानते हैं कि,... " लछमा को औरों के काम की निंदा, अपने खसम , बेटों के काम की चर्चा- प्रशंसा करने की आदत सी पड़ गई है ।"[v]

आचरण से शुद्ध और बड़प्पन की भूखी लछमा को दूसरों को हीन दृष्टि से देखने की आदत थी । यही लछमा दूसरों के आचरण पर लांछन लगाती है। लेकिन वह खुद के अंदर झांक कर कभी नहीं देखती ।

गोविंदी पोस्टमैन पद्मसिंह से प्यार करती है, इस बात का घर में किसी को पता नहीं था । पर एक दिन पद्मसिंह का दिया भुटीकद का लड्डू लछमा के पांव छूते समय उसकी झूगली की जेब से गिर जाता है । लछमा पहले तो उस पर चोरी का आरोप करती है लेकिन रमुवा से सच्चाई जानने के बाद उसे चरित्रहीन कर देती है । रमुवा तथा उसके बौज्यु घर की इज्जत के मामले को दबाना चाहते हैं । वे दोनों ही उसका मुंह बंद करने का जितना प्रयास करते हैं, लछमा उतनी ही अधिक शोर मचाती हैं । जैंता बिना गोद भरे विधवा हो गई थी । लछमा उसे अमंगल समझती थी और सदैव उसका अमंगल ही करने की सोचती थी । अपने तेज स्वभाव और क्षिप्र वाणी के लिए वह सारे धौलछीना में आगे थी ।

लछमा की एक और विशेषता थी कि उसका स्वार्थी स्वभाव । थोकदार की सारी भूमि पर वह अपने बच्चों के हल चलाते देखना चाहती है जब कि वह तीसरे हिस्से की ही हकदार थी । लेकिन स्वार्थ सिद्धि के मार्ग में रुकावट थी जैंता और जसोंतसिंह की । वह चाहती थी कि जैसे भी हो जसोंतसिंह घर-बाहर हो जाए । जैंता का तो कोई आगे था न पीछे । इस दृष्टि से वह फूंक-फूंक कर कदम रखती थी ।

इस प्रकार लछमा एक निहायत स्वार्थी, मुंह फट नारी थी । आत्मकेंद्रित व्यक्ति की यह नारी अपनी और अपने बच्चों की भलाई के लिए देवर, देवरानी और ननंद का अमंगल ही सोचती है ।

विधवा के रूप में जैंता –

जैंता थोकदार जमनसिंह की बहू तथा करमसिंह की विधवा है । यद्यपि जैंता विधवा है फिर भी अपने ससुर के लिए बेटे की जगह है । घर भरा- पूरा और प्रतिष्ठित होने के बावजूद उसका भविष्य अंधकार में है यह वह अच्छी तरह जानती है । जिस दिन उसका पति करमसिंह बाघ के मुंह में गया था उसी के साथ उसकी सौभाग्य रेखा पर वज्र पड़ गया था । माथे की सिंदूर की रेखा भी काले-घने बादलों के बीच लोप हो गई थी । "जिस दिन छाती की गोलाईयों के स्पर्श सुख से गदरा, गद-गदा देनेवाला हाथ करमसिंह का उठ गया, उसी दिन से स्तनों के दूधील होने की आशा भी उठ गई थी ।"[vi] करमसिंह क्या गया जैंता की सारी रौनक ही चली गई । नादुली के शब्दों में, "तुम्हारे मुख दिठ पड़ती है, तो कंठ का गीत कंठ में ही किरमड के कांटे जैसा अटक जाता है ।"[vii] पति की मृत्यु से उसकी अवस्था उस मछली जैसी हो गई थी जो तालाब के पानी के सूखने से अधमरी- सी तड़पती है ..... "पानी गयी तालाब को सुख, मछली तड़फड़ावें अधमरी । ...बन में फूली केतकी बन में ही मुरझाय- भंवर उड़ा आकाश को, उड़के लौट न आए ।"[viii] वाली उसकी स्थिति हो गई थी ।

विधवा होने के बाद जैंता हंसना भी भूल गई थी । कभी-कभार की खिमुली – भिमुली या गोपुली काकी से बातें करते समय फोटो ही होठों-ही- होठों में तैयार की हुई

हंसी हंस देती थी। स्वभाव से शर्मीली होने से वह बोलती भी कम थी। लछमा से बोलने में तो वह कभी पार नहीं पाती थी। क्योंकि जैंता जब तक कोई बात करने की सोचती तब तक लछमा सो बातें करके अलग हो जाती थी। पिछले तीन सालों से जैंता लछमा का कठोर अनुशासन सहते आ रही थी। जैंता चाहे तो लछमा का विरोध कर सकती थी, क्योंकि अभी उसके सिर पर ससुर की छत्रछाया थी, पर न जाने अपने किसी पाप का वह प्रायश्चित कर रही थी पता नहीं।

पति की मृत्यु के पश्चात जैंता को लगता था कि इस घर में उसे खाने-पीने, रहने, ओढ़ने का सुख पाने का कोई अधिकार नहीं है। लेकिन ससुर जी उसे अपने बेटे की जगह मानते थे, साथ ही देवरा जसोंदिया उसकी कोई बात जमीन पर नहीं गिरने देता और भतीजे भी उससे प्यार में ही बात करते। लेकिन जैंता ने अपना मन मार लिया था। उसने एक प्रकार से लछमा को स्वामिनी और अपने आप को नौकरानी मान लिया था। इसीलिए लछमा जो भी काम कहती वह 'हां' दीदी कहकर निर्विरोध भाव से किया करती थी।

लछमा जैंता के लिए खाने में हमेशा कंजूसी बरती थी। घर की एकमात्र स्वामिनी होने से दूध-दही से लेकर हर एक अच्छी चीज पर वह ताला लगा देती थी। जब जैंता रसोई घर संभालने लगी तो लछमा ही सारा सामान उसे निकाल कर देती थी। उसका काम तो सिर्फ अच्छे ढंग से पकाना था। लेकिन उसमें अगर कुछ कसर न रह जाए इसकी वह दक्षता लेती थी। उसमें अगर कोई कसर रह गई तो ससुर और जेठ की चार बातें उसी को सुननी पड़ती थी। और साथ ही साथ लछमा भी उसे कहती, "हं, वे, इतनी उम्र हो गई है तेरी मगर चार मुट्ठी चावल उबालना नहीं आया। रसियारी का चित्त ठिकाने हो, जरा मन लगाकर काम करे, तो अपने आप ही खाने- पीने की चीजों में मिठास आ जाती है।"[ix] इस प्रकार की उपदेश वह सुनने की आदी हो चुकी थी।

उसकी छोटी ननंद गोविंदी भी बेहद प्यार करती थी। दोनों की बहुत अच्छी पटती थी, इसीलिए अपने मन की बातों को वह गोविंद जी से निसंकोच कहती थी। जैंता की इस अवस्था के लिए गोविंदी ने भगवान को दोष देती है तो जैंता कहती हैं , "भला भगवान बेचारे की इसमें क्या खता है? पूरब जनम के मेरे ही कर्मों में खोट रही होगी गोबी, उन्ही का पराशित हो रहा है .... ।"[x] जैंता को लगता है कि उसका भविष्य अंधकारमय हो चुका है और वह सोचती है कि एक-दो साल बाद गोविंदी और जसौंतसिंह का विवाह हो गया तो मैत चली जाएगी या जोग्याणी बनकर हरिद्वार- बद्रीनाथ की राह पकड़ लेगी। परंतु गोविंदी को यह बात रूचती नहीं इसलिए वह कहती है जोग्याणी बनने से तो पातर बनना बेहतर है।

गोविंदी जैंता के बारे में निरंतर सोचती है और उसे ऐसा लगता है कि जैंता और जसौंतसिंह का ब्याह हो जाए तो कितना अच्छा होगा। इसलिए वह अपने विचारों का समर्थन भी करती है .... "नानी भौजी, दस ठौर चारों की तरह मुंह डालने से एक जगह खुले

दिल से मलाई चाटना अच्छा रहता है ।"[xi] फिर क्यों न जैंता जसौंतसिंह से ब्याह करें । जैंता को गोविंदी की यह बात बड़ी बेशर्म लगती है । बात आगे ना बढ़े यह सोचकर वह जाले धोने के लिए तलिगढ़ की ओर चली जाती है । लेकिन जाले धोते हुए गोविंदी की बात पर सोचने लगती है तो तन हल्का-हल्का जैसा, मन पुलका-पुलका जैसा अनुभव करने लगती है । और मन ही मन चाहती है कि गोविंदी उसे बेशर्म बात को बार-बार दोहरा दे । इससे स्पष्ट होता है कि जैंता के मन के किसी कोने में जसौंतसिंह के प्रति लगाव है ।

कुल मिलाकर जैंता शापित राजकुमारी की तरह विधवा का विवश जीवन जीने को विवश है । रूप-सौंदर्य, गुण-सौंदर्य तथा व्यापार-सौंदर्य से युक्त जैंता उपन्यास का सबसे प्रभावशाली चरित्र है ।

कन्या के रूप में - गोविंदी –

गोविंदी धौलछीना के थोकदार जनमसिंह जी की सबसे छोटी और लाडली बेटी है । वह जैंता से बहुत प्रेम करती है उसका और जैंता का संबंध बहुत ही गहरा है । वह एक निश्छल प्रेम की साधिका का और ननंद के रूप में आती है । वह उंटया के पोस्टमैन पद्मसिंह से बेहद प्रेम करती है और उसीके साथ अपना संपूर्ण जीवन बिताना चाहती है । लेकिन वह यह धौलुछीना की इस परंपरा को जानती है कि कोई कन्या अपने मन से वर ढूंढने का चमत्कार नहीं कर सकती और उसके सामने यही प्रश्न है कि वह किस मुंह से यह बात अपने बड़ों के सामने कह सकेगी? जहां ऐसा कुल को कलंक लगाने वाला कार्य करने की पहली लड़की का मर जाना अच्छा माना जाता है । यह जानते हुए भी कि कल उसका ब्याह कहीं और हो जाएगा तो पद्मसिंह का पाप उसके माथे रहेगा । पद्मसिंह की सूरत देखते ही तथा उसके मुख से निकले मीठे वचन सुनते ही न जाने उसे क्या हो जाता है कि वह चाहकर भी कुछ नहीं कह नहीं पाती है ।

गोविंदी और लछमा का ननंद भौजाई का संबंध कभी भी सौहार्दपूर्ण नहीं रहा । लछमा अपनी आदत के अनुसार गोविंदी और जैंता को कई कामों में उलझाए रखती थी और उनमें कोई ना कोई दोष निकालकर उन्हें कोसती थी । जैंता तो सब कुछ सह लेती थी लेकिन गोविंदी उसकी गलत बातों का विरोध करती थी । जैंता को भी यह अन्याय के विरोध करने के लिए उकसाती है । "अरे हट्ट! तुम्हारी ठुली दीदी को उठा ले जाए गणनाट्य के मंदिर के जटाधारी योगी और वहां उसे भरवाए अपनी अत्तर की चिलम ! ... उससे तो तुम डरती हो, मैं क्यों डरूँ?"[xii]

इस प्रकार एक ननंद के रूप में, एक प्रेमिका के रूप में गोविंदी का चरित्र सुंदर बन पड़ा हुआ है ।

अन्य नारी पात्र –

अन्य नारी पात्रों में इस उपन्यास के अंतर्गत बहू नरुली, विधवा दुरगुली, खिमुली-भिमुली, गोपुली काकी, कलावती और भागुली नदुली इत्यादि नाम लिए जा सकते हैं । यह सारी अपने-अपने स्वभाव के अनुसार उपन्यास के अंतर्गत अपना एक विशिष्ट स्थान रखती

हुई नजर आती है। नरुली किसनसिंह नेगी की बहु थी और उसका पति चतुरसिन्ह फौज में हौलदार था। नरौली एक सीधी सरल स्वभाव की पति व्रता नारी है। उसने अपने चरित्र को कभी चलायमान नहीं होने दिया है, तो दुरगुली पाण्डित्याण जोग्यूड के रूद्रमणि पंडित की बाल विधवा है। लेकिन उसके चरित्र को कलंकित होते किसी ने नहीं दिया देखा हुआ है। वह एक हंसोड़, सेवाभावी वृत्ति की बाल विधवा है।

भागुली-नादुली निम्न वर्ग से संबंधित श्रमजीवी है। उनके अपने खेत तो नहीं थे, लेकिन दूसरों के खेतों में वह पसीना बहाकर दो समय की रोटी का जुगाड़ कर लेती है और अपने बच्चों का पालन पोषण करती हैं। उनकी पढ़ाई के खर्च का भी इंतजाम करती है और साथ ही विषम परिस्थितियों से जुझती हुई अपने दुखों को गीतों के माध्यम से भुलाने की कोशिश करती है। जैंता के पूछने पर उदास भागुली कहती है , "द गुसैणी हम गरीबों का घर क्या गुलजार होता है ? खसम हमारे दिनभर ओढ़गिरी, बढ़ईगिरी करेंगे, या अल्मोड़ा के बाजार जाकर, लकड़ियों के गढ़ौल बेचेंगे, तब जाके घर में जरा नूण- तेल - तमाखू की सूरत दिखाई देती है | "[xiii]

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि 'हौलदार' के सभी नारी चरित्र अविकसित हैं। हर नारी पात्र की अपनी अलग कथा है और यह सारी कथाएं मिलकर ही अल्मोड़ा के पर्वतीय जीवन का उद्घाटन करती है। अतः भले ही उपन्यास के नारी पात्र अविकसित है, इनके बिना पर्वतीय जीवन की समस्याओं का प्रभावशाली चित्र संभव नहीं था। इस दृष्टि से सभी नारी पात्र अपनी जगह महत्वपूर्ण नजर आते हैं।

संदर्भ सुची –

[i] हौलदार – शैलेश मटियानी – 13

[ii] हौलदार – शैलेश मटियानी – 117

[iii] हौलदार – शैलेश मटियानी – 77

[iv] हौलदार – शैलेश मटियानी – 76

[v] हौलदार – शैलेश मटियानी – 153

[vi] हौलदार – शैलेश मटियानी – 71

[vii] हौलदार – शैलेश मटियानी – 308

[viii] हौलदार – शैलेश मटियानी – 309

[ix] हौलदार – शैलेश मटियानी – 117

[x] हौलदार – शैलेश मटियानी – 185

[xi] हौलदार – शैलेश मटियानी – 136

[xii] हौलदार – शैलेश मटियानी – 147

[xiii] हौलदार – शैलेश मटियानी – 311